शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस मनाया गया

दिनांक 19.3.19

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में दिनांक 19.3.19 को अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस मनाया गया। इस वर्ष के दिवस का विषय "वन एवं शिक्षा" (Theme-Forests and Education) था। इस अवसर पर मुख्य परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम एवं कोन्फ्रेंस हाल में मासिक सेमिनार (monthly seminar) का आयोजन किया गया।

संस्थान के निदेशक श्री मानाराम बालोच, भा.व.से. ने कहा कि वनों की महत्ता है तथा इस तरह के दिवस हमें प्रकृति प्रदत्त संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक करते रहते हैं। उन्होंने जंगल बचाने , बढ़ाने के साझा वन प्रबंधन के तरीके के बारे में बताते हुए वन क्षेत्र , वृक्ष आवरण , झाड़ी-नुमा वन क्षेत्र , ओपन फॉरेस्ट , मोडेरेट फॉरेस्ट, घने वन क्षेत्र आदि के बारे में जानकारी दी। श्री बालोच ने प्रकृति कार्यक्रम की जानकारी देते हुए संस्थान की तरफ से केंद्रीय विद्यालय एवं जवाहर नवोदय विद्यालय में "प्रकृति" कार्यक्रम के तहत आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में बताया। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष, रसायन प्रयोगशाला, भू-जल विभाग डॉ. डी. डी. ओझा ने कहा कि वृक्षारोपण पुण्य का काम है, वृक्ष जन कल्याण के लिए लगाने की परंपरा रही है, वनस्पतियों की स्वतः उपादेयता है, जहां वनस्पति होगी वहाँ जीवन होगा। उन्होंने वन संरक्षण में जन-भागीदारी की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि लालची प्रवत्ति के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अतिदोहन होता है , वन परोपकारी है, अनेक प्रकार की चीजें देता है , जितने वन होंगे, प्रदूषण कम होगा, वन के मनोरम दृश्य से मन भी प्रसन्न होगा । इस अवसर पर संस्थान की मासिक सेमिनार के अंतर्गत डॉ. ओझा ने अपने अतिथीय संभाषण "वन एवं जल" विषय पर व्याख्यान देते हुए वन, वनस्पति, विभिन्न प्रकार के दृश्य प्रदूषण जैसे जल प्रदूषण , मिट्टी प्रदूषण तथा अदृश्य प्रदूषण जैसे ध्वनि, विद्युत चुम्बकीय तरंगों , मोबाइल, कंप्यूटर, अपमार्जक (Detergents) सौन्दर्य प्रसाधन इत्यादि घरेलू प्रदूषण, प्लास्टिक, जल संरक्षण इत्यादि की व्याख्या की। डॉ. ओझा ने जल संरक्षण की आवश्यकता बताते हुए कहा कि जल का अपव्यय नहीं होना चाहिए , यदि जल की एक बूंद भी बचाई जाती है तो यह एक तरह से उसका उत्पादन हुआ।

वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने पुरातन काल से वर्तमान तक वन एवं शिक्षा की व्याख्या करते हुए बताया कि पुराने समय में घने वन हुआ करते थे , जब कि आज वनों को इसके घनत्व एवं उत्पादन इत्यादि के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। उन्होंने कहा कि वन को परिभ्रांषित (Forest Degradation) होने से बचाना है, वन क्षेत्र की महत्ता को जानकर वातावरण को सुचारु रूप से बचाए रखना है । इससे पूर्व विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी ने वनों की महत्ता के परिपेक्ष में अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस के बारे में जानकारी दी।

वैज्ञानिक "एफ" डॉ.यू. के. तोमर ने कहा कि हम कुदरत से ही सीखते हैं , वनों से बहुत कुछ सीखा है , कृषि में वनों की ही प्रजातियों को लाये हैं। उन्होंने कहा कि पेड़ की आबो-हवा तथा जंगलों का अलग ही दृश्य है हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

श्री अनिल शर्मा , तकनीकी अधिकारी ने वनों से होने वाले लाभ तथा कार्बन प्रथक्कीकरण (Carbon Sequestration) की चर्चा करते हुए कहा कि भविष्य की पीढ़ी को यह ज्ञान बढ़ाया जाये तो "वनों से प्रेम करना सीखना (learn to love forests)" सार्थक होगा।

विस्तार प्रभाग के डॉ. बिलास सिंह , सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञपित किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीशियन, विस्तार प्रभाग ने किया।

इससे पूर्व अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस के अवसर पर संस्थान के मुख्य परिसर में मुख्य अतिथि, संस्थान के निदेशक सहित संस्थान के अधिकारियों/वैज्ञानिकों/कर्मचारियों/शोधार्थियों द्वारा पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर सुविधायें एवं सेवाएँ प्रभाग एवं आफरी नर्सरी के सहयोग से टबुबिया रोजीआ (*Tabubia rosea*) तथा सफ़ेद व पीले रंग के 17 बोगेनवेलिया सहित 19 पौधे रोपित किए गए। विस्तार प्रभाग के श्री महिपाल बिशनोई , तकनीकी अधिकारी, श्री धानाराम, तकनीकी अधिकारी एवं श्री तेजाराम का सहयोग रहा।

Dr. D.D Ojha